विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी- शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या

डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
दिनांक - 03/09/2020

दिवसकरगतिरिव प्रकटित विविधसंक्रान्तिः। पातालगुहेव तमोबहुला। हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्यहृदया। प्रावृडिवाचिरद्युतिकारिणी।

अर्थ- (दिवसकरगतिरिव प्रकटितविविध संक्रान्तिः) अनेक राशियों में संक्रमण को प्रकट करने वाली सूर्य की गति के समान यह लक्ष्मी विविध व्यक्तियों में सञ्चरण करने वाली है। (पातालगुहेव तमोबहुला) पातालगुफा के समान यह लक्ष्मी तमोगुण बहुला है। (हिडिम्बेव भीमसाहसैकहार्य-हृदया) एकमात्र पाण्डुपुत्र भीम के साहस से ही आकृष्ट चित्तवाली हिडिम्बा के समान केवल प्रचण्ड साहसों से ही इस लक्ष्मी का हृदय हरा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

(प्रावृडिवाचिरद्युति कारणी) क्षणभर के लिए विद्युत् उत्पन्न करने वाली वर्षा ऋतु की भाँति यह लक्ष्मी देर तक न टिकने वाले प्रकाश को उत्पन्न करने वाली है।

टिप्पणी -

सूर्य एक वर्ष में मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन इन बारह राशियों में संक्रमण करता है। सूर्य का एक राशि से अन्य राशि में यह संक्रमण ही 'संक्रान्ति' कहलाता है। ज्योतिष शास्त्र में विभिन्न राशियों की संक्रान्तियों के पृथक् नाम प्रतिपादित किये गये हैं।

यहाँ भी सूर्य और लक्ष्मी पक्षों में संक्रान्ति का अर्थ भिन्न-भिन्न है (सूर्य = बारह राशियों में संक्रमण, लक्ष्मी = विभिन्न व्यक्तियों में संचरण) इसी प्रकार अगले वाक्य में पाताल की गुफा अन्धकार से आच्छन्न रहती है और लक्ष्मी तमोगुणजनित मोह से व्याप्त रहती है - फिर भी आलंकारिक न्याय से 'पूर्णोपमा' अलंकार ही मानेंगे।

महाभारत में कथा आती है कि पाण्डुपुत्र भीम के पराक्रम व साहस पर मुग्ध होकर हिडिम्बा ने उससे विवाह कर लिया। भीम में श्लेष भी स्पष्ट है - भयानक साहस तथा भीम का साहस। वर्षा ऋतु क्षणमात्र के लिए चपला की चमक पैदा करती है, इसी प्रकार लक्ष्मी भी व्यक्ति को क्षणिक सम्पन्नता, प्रसन्नता व शोभा प्रदान करती है। यहाँ भी 'पूर्णोपमा' अलंकार है।

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough." - Rabindranath Tagor

Scanned with CamScanner

पदव्याख्या -

दिवसकरगतिः - दिवसं करोति दिवसकरः, दिवसकरस्य गतिः (ष० तत्पु०)। प्रकटित विविध संक्रान्तिः - प्रकटिता विविधेषु (जनेषु राशिषु च) संक्रान्तिः यया सा (बहु०)। पातालगुहा - पातालस्य गुहा (ष० तत्पु०)। तमोबहुला - तमसा (अन्धकारेण तमोगुणेन च) बहुला (तृ० तत्पु०)। भीमसाहसैकहार्यहृदया - भीमश्चासौ साहसः भीमसाहसः (क० ध्या०) पक्षे - भीमस्य साहसः (ष० तत्पु०) भीमसाहसेन एकेन हार्यं हृदयं यस्याः सा (बहु०)। अचिरद्युतिकारणी - अचिरा द्युतिः अचिरद्युतिः (क० ध्या०) तां कर्तुं शीलं यस्याः सा (बहु०)। पक्षे - अचिरद्युतिः विद्युत्, कारिणी - कृ + णिनि + ङीप्। प्रावृट् - प्रकर्षेण आवर्षति अत्र प्र + आ वृष् + क्विप् प्र० ए० = वर्षाऋतु।

Scanned with CamScanner